

चरखा

चरखा एक ऐसा यंत्र है जिसकी सहायता से प्राकृतिक अथवा कृत्रिम रेशों से सूत ही कटाई की जाती है। पूर्वकाल में तकली की सहायता से हाथ से की जाने वाली कटाई क्रिया अब चरखे से की जाने लगी थी। प्राचीनकाल से ही चरखा भारतीय घरों में अमतीर से पाया जाता है। हड़प्पा और मोहेंजो-दड़ो जैसे प्राचीन स्थलों पर की गई खुदाइयों से इसके प्रमाण मिले हैं। ऋग्वेद में भी कटाई और बुनाई संबंधी उल्लेख मिलते हैं।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र (चौथी शताब्दी ई.पू.) में चरखे का उल्लेख भी इसकी प्राचीनता का प्रमाण देता है। उस समय, इसे इसके बाह्य स्वरूप अर्थात् घागा खींचने, ठठने और लपेटकर सूत बनाने के यंत्र के रूप में देखा जाता था। कौटिल्य ने सूत्राध्यक्ष अथवा तंतु विभाग के अध्यक्ष के रूप में एक मुख्य राजकीय अधिकारी का उल्लेख किया है।

सदियों से चरखा कारीगरों की जीविका का मुख्य स्रोत रहा है जो अपार श्रद्धा के साथ उस पर मौली बांधते थे, इसके नाम से मन्त मांगते थे और धूप जलाकर उसपर अपना काम शुरू करते थे। पारम्परिक रूप से, कातने का कार्य महिलाओं द्वारा घर पर किया जाता था और यह उनके जीविकोपार्जन का साधन था। कच्चा कपास चुनने से लेकर, धुनने, पूनी बनाने, कातने और बुनने तक की समस्त प्रक्रिया हाथों द्वारा की जाती थी और इसके लिए उच्च कोटि का कौशल अपेक्षित था। भारत की यात्रा करने वाले गिंस के निवासी मार्को पोलो ने, 1288 ईस्वी में अत्यंत भावप्रवणता के साथ भारत के सूती वस्त्रों के बारे में लिखा था जिसकी तुलना उन्होंने मकड़ी के जाल से की थी। बाद में, मुगल काल के दौरान हाथ से की जाने वाली बुनाई और कटाई महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में बने रहे।

16वीं शताब्दी के दौरान विदेशी व्यापारियों नामतः पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और बाद में अंग्रेजों ने भारतीय हथकरघा वस्त्रों का यूरोप में निर्यात करना शुरू किया जहां पर इन वस्त्रों की बढ़िया किस्म के कारण मुंहमांगे दाम मिलते थे। तथापि, इंग्लैंड के बाजारों में भारतीय वस्त्रों की अधिकता से वहां के कपड़ा निर्माताओं में विरोध का स्वर उठने लगा जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश संसद ने एक अधिनियम पारित किया जिसके अंतर्गत भारत से उस देश में लाए गए कपड़े पर अधिक कर लगाया जाने लगा। इंग्लैंड में भारतीय वस्त्रों का प्रयोग करने वालों पर भारी जुर्माना भी लगाया गया।

तत्पश्चात्, इंग्लैंड ने भारत से कपास का आयात करके सस्ता और मिल में तैयार कपड़ा भारत को भेजना शुरू किया। इसके परिणामस्वरूप भारतीय कटाई और बुनाई का काम करने वालों का रोजगार कम हो गया और उनकी आर्थिक स्थिति खराब होती गई।

वर्ष 1854 में बंबई में प्रथम कपड़ा मिल ने काम करना शुरू किया जिससे देश में कपड़ा उद्योग के मशीनीकरण की शुरुआत हुई। तत्पश्चात्, कटाई और बुनाई संबंधी मशीन का इस्तेमाल होना आरंभ हो गया। इस प्रवृत्ति के कारण गांवों का जनजीवन अत्यधिक भावित हुआ और इससे भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान चरखा स्वदेशी आंदोलन का एक महत्वपूर्ण चिह्न बन गया, जिसमें विदेशों में मशीनों से तैयार वस्तुओं का बहिष्कार करके उनके स्थान पर भारतीय हथकरघा वस्त्रों को अपनाकर आर्थिक क्रांति लाने के लिए आह्वान किया गया। चरखे पर बल देने का उद्देश्य था गांवों के लोगों की गरीबी दूर करना। इससे लोग घर पर काम करके अपनी आय बढ़ा सकते थे और साथ ही ब्रिटिश उद्योगों के लिए भारतीय मुद्रा के प्रवाह पर भी रोक लगाई जा सकती थी।

महात्मा गांधी ने चरखे को एक नया अर्थ दिया और नवीन व्याख्या की। चरखा उन्हें 'प्रेम के दिव्य नियम के निरंतर घूमते पहिए' का स्मरण कराता था। गांधी जी के लिए चरखे पर सूत कातना अहिंसा का प्रतीक होने के साथ-साथ एक तपस्या अथवा एक संस्कार था, आध्यात्मिक उत्थान का माध्यम, धर्म, स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता का प्रतीक, श्रम और मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रतीक भी था।

महात्मा गांधी का विश्वास था कि हाथ से की जाने वाली कटाई और हाथ से की जाने वाली बुनाई का पुनः प्रचलन भारत के आर्थिक और नैतिक पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण योगदान देगा। महात्मा गांधी ने 'चरखे' का प्रयोग स्वावलंबन के प्रतीक के रूप में तथा ब्रिटिश साम्राज्य को यह संदेश देने के लिए किया कि भारत अपने लिए स्वयं वस्त्र तैयार कर सकता है और इसके लिए उसे साम्राज्य पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। उनके शब्दों में:

'चरखा' मेरे लिए जनमानस की आशा का प्रतिनिधित्व करता है। यह विधवाओं के लिए एक मित्र और उनका आलम्बन है। चरखे ने ग्रामीणों को निष्क्रिय नहीं होने दिया, क्योंकि चरखे में ओटाई, धुनाई, ताना बुनना, आकार देना, रंगाई तथा बुनाई जैसे पूर्ववर्ती और परवर्ती उद्योग शामिल थे। इन्हीं की वजह से गांवों के बड़ई और लुहार भी काम में व्यस्त रहते थे।

वर्ष 1924 में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक की पूर्व-संध्या पर महात्मा गांधी ने एक अपील जारी की जिसमें यह उल्लेख किया गया था - "मैं चरखे का पक्षधर हूँ। इसके दो पहलू हैं - डरावना एवं सौम्य। अपने डरावने पहलू के बल पर यह उस बहिष्कार को जन्म देगा जो हमारे स्वतंत्र राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए आवश्यक है..... अपने हितकारी पहलू के जरिए यह ग्रामीणों में एक नए जीवन के प्रति आशा जगाता है।

वर्ष 1921 में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने खादी का प्रचार आरंभ किया। इसने 'ऑल इंडिया स्पिनर्स एसोसिएशन' नाम से एक स्वतंत्र निकाय का गठन किया, जो चरखा संघ नाम से लोकप्रिय था।

चरखे की उत्पादकता में सुधार लाने के लिए गांधीजी इसके तकनीकी पक्ष में सुधार करना चाहते थे। उन्होंने एक अधिक कार्यकुशल चरखे का डिजाइन तैयार करने हेतु एक प्रतियोगिता की घोषणा की। वे चरखे का ऐसा डिजाइन चाहते थे जो प्रचालन में सरल, लागत में किफायती और अधिक मात्रा में बेहतर किस्म का सूत तैयार करने में सक्षम हो। जब गांधी जी यरवदा जेल में थे, तो उन्होंने चरखे का एक ऐसा पोर्टेबल डिजाइन तैयार करने का प्रयास किया जिसे आसानी से कहीं भी ले जाया जा सकता था।

दो डाक-टिकटों के इस सेट में महात्मा गांधी द्वारा उपयोग में लाए गए दो प्रकार के चरखों को अंकित किया गया है : एक पारंपरिक चरखा तथा दूसरा पोर्टेबल चरखा, जिसका डिजाइन गांधी जी द्वारा यरवदा जेल में तैयार किया गया था।

आभार :-

मूलपाठ	: राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय तथा इंटरनेट से प्राप्त सामग्री पर आधारित
डाक-टिकट / प्रथम दिवस आवरण एवं मिनिएचर शीट	: शंखा सामंत
विरूपण	: अलका शर्मा



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसा
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	: 5 लाख x 2 टिकटें 0.5 Million x 2 Stamps
मिनिएचर शीट Miniature Sheet	: 2 लाख (1000 पैसा) 0.2 Million (1000 p)
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

CHARKHA

A spinning wheel or Charkha is a device for spinning thread or yarn from natural or synthetic fibers. The spinning wheel replaced the earlier method of hand spinning with a spindle. From the earliest times, the spinning wheel was a common sight in Indian households. This is borne out by the excavations carried out at ancient sites of Harappa and Mohenjo-Daro. Earlier references about the processes of spinning and rearing are found in the Rig Vedas.

The allusion to the existence of the spinning wheel in the *Arthashastra* of Kautilya (4th century B.C.) is another proof of its antiquity. It was then viewed in its outer aspect- as an instrument for making yarn by drawing out, twisting and winding fibres. Kautilya mentions an important state official as *Sutradyaksh* or Head of the yarn section.

For centuries Charkha remained an important source of livelihood for artisans who, in utmost reverence, tied sacred threads to it, vowed in its name and burnt incense before starting their work on it. Traditionally, however, spinning was done by women at home and provided them means of earning their livelihood. The entire process, from the picking of raw cotton to carding, slivering, spinning and weaving was done by hand, and involved great skill. Marco Polo, the Venetian, who visited India in 1288 A.D. wrote ecstatically about India's cotton fabrics which he compared to a spider's web. Later, during the Mughal period also hand-rearing and spinning remained important occupations.

During the 16th Century, foreign traders, namely, the Portuguese, the Dutch, the French, and later the British, started exporting Indian hand-made textiles to Europe where these were prized for their fine quality. However, the influx of Indian fabrics in their markets provoked opposition among the cloth manufacturers in England, following which the British Parliament passed an Act imposing excessive duties on cloth brought into the country from India. Heavy penalty was also imposed on those who used Indian fabric in England.

Thereafter, England started importing raw cotton from India and sending back cheap, mill-manufactured cloth back to India. This resulted in Indian spinners and weavers being forced into lack of work resulting in weakening of their economic condition.

In 1854, the first textile mill started functioning at Bombay, paving the way for mechanization of the textile industry in the country. Hereafter, the skills of spinning and weaving progressively started to decline. Life in the villages was affected by this trend in a big way impacting the Indian rural economy adversely.

During India's struggle for freedom, the Charkha became a significant symbol of Swadeshi movement which sought to bring about an economic revolution by discarding machine-made goods produced abroad and replacing them with the Indian hand-made cloth. The emphasis on Charkha was aimed both at removing poverty of people in villages, who could supplement their income by working at home, and at

impeding the flow of Indian money to the British industries.

Charkha received a new meaning and novel interpretation at the hands of Mahatma Gandhi. It reminded him of *"the ever-moving wheel of the Divine Law of love"*. To Gandhiji spinning was like penance or sacrament, a medium for spiritual upliftment, a symbol of dharma, of self-help and self-reliance, of dignity of labour and human values, besides, being an emblem of nonviolence.

Mahatma Gandhi believed that the revival of hand-spinning and hand-weaving would make the largest contribution to the economic and moral regeneration of India. Mahatma Gandhi used the 'charkha' as a symbol of self-reliance and to send out the message to the British Empire that India can make its own cloth and did not need to rely on the empire to do it. In his words:

"The spinning wheel represents to me the hope of the masses... It was the friend and solace of the widow. It kept the villagers from idleness. For the Charkha included all the anterior and posterior industries - ginning, carding, warping, sizing, dyeing and weaving. These, in their turn, kept the village carpenter and the blacksmith busy."

On the eve of the All India Congress Committee meeting in 1924, Mahatma Gandhi issued an appeal which stated - *"I believe in the spinning wheel. It has two aspects, terrible and benign. In its terrible aspect, it is calculated to bring about the only boycott we need for an independent national existence... In its benign aspect, it gives a new life and hope to the villager"*.

In 1921, the Congress Working Committee undertook Khadi promotion. It organized an independent body known as the 'All India Spinners' Association', popularly known as the *Charkha Sangh*.

Gandhiji was very keen on improving the Charkha technologically in order to improve its productivity. He announced a competition for design of a more efficient Charkha. This Charkha was required to be simple in operation, cheap to manufacture, and able to produce yarn of good quality in greater quantity. While he was lodged in Yeravda Jail, Gandhiji himself worked on a portable design of the Charkha which could be easily carried anywhere.

This set of two stamps depicts the two kinds of Charkhas used by Mahatma Gandhi: The traditional Charkha and the portable version of the Charkha which was designed by Gandhiji while he was in Yeravda Jail.

Credits:-

- | | |
|-----------------------------|---|
| Text | : Based on the material obtained from National Gandhi Museum and internet |
| Stamp/FDC & Miniature Sheet | : Sankha Samanta |
| Cancellation | : Alka Sharma |

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

चरखा Charkha



विवरणिका BROCHURE

